वर्तमान शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में डा0 एनी बेसेंट के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ. विनीता गुप्ता*

सारांश

डा0 एनी बेसेंट उन विरले व्यक्तियों में से एक थीं जिन्होंने जन्म तो लन्दन में लिया और सेवा भारत में की। 16 नवम्बर 1893 में भारत में आयीं और यहीं की हो गईं। 1907 में एनीबेसेंट थियोसोफीकल सोसायटी की सभापति बनीं और संसार के अधिकांश भागों की यात्रा करके इस संस्था के सिद्धान्तों को प्रसारित किया। इन्होंने बॉय–स्काउट और गर्ल गाइडिंग की स्थापना की। एनीबेसेंट ने भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उसी प्रकार अपने मौलिक सिद्धान्तों तथा विचारों का प्रतिपादन किया जिस प्रकार उन्होंने धर्म, नीति, पत्रिका–प्रकाशन, राजनीति, एवं समाज सुधार सम्बन्धी कार्यों में चमत्कारी अनुभवों और प्रयोगों द्वारा हम सभी भारतीयों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनके द्वारा प्रस्तावित शिक्षाचिन्तन सर्वकालिक एवं व्यावहारिक है। उनके इस योगदान के लिए हम सदैव चिरस्मरणीय रहेगें।

प्रस्तावना

''गुलामी के ऐशोआराम से स्वतन्त्रता की कठोरतायें अच्छी हैं। यही होम रूल आन्दोलन की भावना है, इसलिए इसे दबाया नहीं जा सकता और न ही कुचला ही जा सकता है। यह सदाबहार आन्दोलन है, और नौकरशाही द्वारा दिये गये किसी प्रलोभन से इसे अपने जन्मसिद्ध अधिकार को किसी और चीज से बदलने के लिए फुसलाया भी नहीं जा सकता है।'' — **एनी बेसेंट**

संसार में ऐसे व्यक्ति बहुत कम हुये हैं जिन्होंने जन्म अपने देश में लिया हो और जन सेवा कार्य दूसरे देश में किये हों। डा0 एनी बेसेंट उन विरले व्यक्तियों में से एक हैं। इनका जन्म इंग्लैण्ड में हुआ और जन सेवा में भारत का सहयोग किया। आधुनिक भारत के निर्माण में उनका ठोस योगदान है।

डा0 एनी बेसेंट का जन्म एक अक्टूबर 1847 को लन्दन में हुआ। इनके पिता का नाम बिलियम पेज बुड था जो इंग्लैण्ड में डॉक्टर थे। वे अंग्रेज थे। उनकी माता आयरिश थीं। माता का आप पर अधिक प्रभाव पड़ा। एनी बेसेंट जब पाँच वर्श की थीं तब आपके पिता का देहान्त हो गया। अतः आपकी प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था कु0 मैरियट नामक धनिक महिला ने की जो योग्य शिक्षिका थी जिससे आपका सम्बन्ध अध्ययन एवं ज्ञानार्जन से होने लगा। शिक्षा प्राप्ति के समय ही आपका विवाह पादरी फ्रैंक बेसेंट से हुआ। अतः एनी को एनी बेसेंट कहा जाने लगा। विभिन्न कारणों से उनका वैवाहिक जीवन सन्तोशजनक न रहा और 1873 में टूट गया। उनके पति के लिए यह एक कश्टकर स्थिति थी कि उनके मनन में ईसाई धर्म के प्रति शंकायें उठने लगी जिनका उन्हें कोई समाधान नहीं मिला। वास्तव में ईसाई धर्म के प्रति उनकी अनास्था ही कालान्तर में हिन्दू धर्म के प्रति उनकी आस्था का मार्ग प्रशस्त कर सकी।

वैवाहिक जीवन की समाप्ति के पश्चात् बेसेंट सार्वजनिक क्षेत्र और सेवा सम्बन्धी कार्यों में संलग्न रहीं। 'सीक्रेटडाक्ट्रिा' पुस्तक को पढ़ने के बाद सभी भ्रान्तियाँ दूर हुई। ये पुस्तक की लेखिका मैडम हैलेना पेट्रोयना ब्लावटस्की से इतना प्रभावित हुई कि उनकी शिश्या भी बन गयीं। 1885 में मैडम ब्लावेटस्की ने इंग्लैण्ड में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की। 1887 में एनी बेसेंट इसकी सदस्य बन गई और घोशित किया कि थियोसोफिकल के सिद्धान्त सर्वमान्य हैं क्योंकि सभी धर्म, सत्यान्वेशण के मार्ग का अनुसरण करते हैं। इनका मानना था कि सत्य ही सर्वश्रेश्ठ धर्म है। 16 नवम्बर 1893 को आप भारत आयीं तथा भारत को ही अपनी मातृभूमि मानकर यही जीवन पर्यन्त सेवा के कार्यों में लगी रहीं।

भारत आने पर इन्हें लगा कि अपनी मातृभूमि में आ गई हैं। यह के जन–जीवन में घुल मिल गईं और 1901 में समस्त भारतीय तीर्थों की यात्रा की तथा विभिन्न धर्मों के आचार्यों से भेंट की। ये भारत की धर्म, दर्शन और संस्कृति से प्रभावित हुईं। इन्होंने जाना कि भारत में अशिक्षा, बाल–विवाह, अन्धविश्वास जैसी सामाजिक बुराईयाँ व्याप्त हैं। अतः इन्होंने जड़ को पकड़ा और शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया।

*रीडर एवं विभागध्यक्षा, शिक्षाशास्त्र, दाऊ दयाल महिला (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश।

6 जुलाई 1907 को एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसायटी की सभापति चुनी गयीं तथा संसार के अधिकांश भागों की यात्रा करके इस संस्था के सिद्धान्तों को प्रसारित किया। ये बनारस में रहीं। शैक्षिक विकास के लिए इन्होंने देश के अनेक भागों में विद्यालय खोले तथा शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने कहा कि धार्मिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा तथा प्रेम एवं आनन्द के वातावरण के अभाव में शिक्षा अधूरी है। इन्होंने सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। इनकी प्रंशसा करते हुए अक्टूबर 1947 को श्रीमती सरोजनी नायडू ने लिखा कि ''डा0 बेसेंट से भारतीय जीवन का कोई क्षेत्र उनसे अछूता नहीं रहा।'' इन्होंने 400 से भी अधिक पुस्तकों की रचना की। इसके अलावा इन्होंने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देते हुये बाल–विवाह को समाप्त करने एवं विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने, प्रौढ़ शिक्षा तथा निरक्षरता–निवारण के उद्देश्य से युवक तथा युवतियों का संघ बनाकर बॉय–स्काउट एवं गर्ल–गाइड की स्थापना की।

भारत को उपनिवेशिक स्वराज्य दिलाने के उद्देश्य से इन्होंने ''आल इण्डिया होमरूल लीग'' की स्थापना की। इस आन्दोलन के कारण अंग्रेज सरकार ने इन्हे कैद कर लिया बाद में विश्व जनमत के कारण मुक्त किया। यह जीवन के अन्तिम क्षणों तक भारत में ही रहीं। 28 सितम्बर 1933 में यह समाज सेविका, धर्म–प्रचारिका, भारतीय राश्ट्रीय चेतना की अग्रदूत और शिक्षाशास्त्री अपनी यह लीला समाप्त कर परम सत्ता में विलीन हो गई।

शिक्षा का अर्थ

डा0 एनी बेसेंट ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार को स्पश्ट करते हुये लिखा है कि– ''बालक में अन्तर्निहित उन समस्त शक्तियों का विकास करना जिन्हें वह अपने साथ लेकर संसार आता है शिक्षा है।''

इनके अनुसार बच्चों को कुछ तथ्य रटवाकर परीक्षा में उत्तीर्ण करवाना ही शिक्षा नहीं है, शिक्षा द्वारा तो उनका शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास होना चाहिए।

शिक्षा के उद्देश्य

एनी बेसेंट शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन मानती थी। ये भौतिक और आध्यात्मिक पक्ष पर समान बल देती थी।

उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक की समस्त आन्तरिक क्षमताओं को प्रकृति के कक्ष में प्रकट करना है जिसमें बालक का समस्त विकास निहित होता है। बालकों को पुस्तकीय ज्ञान देना अज्ञानता है। शिक्षा द्वारा बालकों में वह योग्यता विकसित करनी चाहिए जिससे वह जीवन में आने वाली कठिनाईयों को साहस के साथ सुलझा सकें अर्थात् बालक में तार्किक शक्ति का विकास होना चाहिए।

बालक को विभिन्न विशयों के अध्ययन एवं विविध आचरण द्वारा ही छात्रों में एकता व सदाचार आदि गुणों को विकसित करना चाहिए। बालकों को शिक्षक का विश्वासपात्र बनने एवं माता–पिता के लिए नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। जब बालक शिक्षक द्वारा बताये गये ज्ञान को आत्मसात कर लेता है जिससे वह मस्तिश्क के तंतुओं को अनुशासन में रखने का अभ्यस्त हो जाता है तब शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। इनके अनुसार कोई भी शिक्षा जो मनुश्य को अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक नहीं होती, एक अधुरी शिक्षा है।

शिक्षा की पाठ्यचर्या

डा0 बेसेंट ने शिक्षा के लिए एक शिक्षा योजना बनाई जिसे शिक्षाविदों ने एक आदर्श शिक्षा योजना का नाम दिया। इनके अनुसार पूर्व प्राथमिक माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय की व्यवस्था थी तथा बेसेंट के अनुसार उच्च शिक्षा के लिए कालेज खोले जाये जो स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा देते हों। पाठ्यक्रम भी बालकों की आयु के अनुसार अलग–अलग था –

(1) जन्म से पाँच वर्ष की आयु के लिए गृह शिक्षा।
(2) छठे एवं सातवें वर्ष में विद्यार्थी के प्राथमिक शिक्षा तथा आठ से दस वर्ष की आयु के लिए भी प्राथमिक शिक्षा।
(3) ग्यारह से चौदह वर्ष की आयु वर्ग के लिए माध्यमिक शिक्षा।
(4) पन्द्रह से सत्रह वर्ष की आयु तक उच्च माध्यमिक शिक्षा।

डा0 बेसेंट के अनुसार पूर्व प्राथमिक शिक्षा काल में बालकों को रोचक कहानियों के माध्यम से धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा दी जाये तथा अक्षर ज्ञान, सामान्य गणित, भाशा, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन तथा विभिन्न रोचक कार्यक्रमों द्वारा बालक को धार्मिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। चित्रों द्वारा पशुओं के नाम तथा अक्षर को मिलाकार शब्द बनाना भी इसमें शामिल हैं।

प्राथमिक शिक्षा में सामान्य गणित, भाशा, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन तथा विभिन्न रोचक कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए।

उच्च माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर व्यवसाय, कला, विज्ञान, हस्तशिल्प, कृशि आदि विशयों का अध्ययन कराया जाये। इसके अतिरिक्त छात्र को अंग्रेजी, हिन्दी एवं प्रान्तीय भाशा, गणित, शरीर विज्ञान आदि समस्त विशयों का अध्ययन भी कराया जाना चाहिए। इसके अलावा नैतिक, शारीरिक, राजनीतिक, धार्मिक शिक्षा भी अनिवार्य रूप से देनी चाहिए।

ग्रामीण छात्रों को अपनी मिट्टी का ज्ञान खेती के औजारों के उपयोग की जानकारी, बीज का ज्ञान, बागवानी, मौसल अनुकूल फसल उगाने का ज्ञान, बढ़ईगीरी, लौहारगीरी, पशु की नस्ल और उनके रोग, उपचार का ज्ञान, मानव स्वास्थ्य ज्ञान आदि देना चाहिए। इन्होंने चिकित्सा शास्त्र, कानून शिक्षा, कृशि शिक्षा, तकनीकि शिक्षा के लिए अलग–अलग महाविद्यालय खोलने की बात की।

शिक्षण विधियाँ

एनी बेसेंट का विचार था कि शिक्षण–विधि शिक्षा देने का साधन अवश्य है परन्तु शिक्षक को उसका दास नहीं होना चाहिए। इनके अनुसार शिक्षा एक विज्ञान है अतः उसे समझने व पढ़ने के लिए उचित विधियों का प्रयोग आवश्यक है। एनी बेसेंट के अनुसार– ''शिक्षा वह पूर्णता है जिसके द्वारा व्यक्ति निरन्तर ज्ञानरूपी प्रकाश पाता रहता है। इसे किसी भी पद्धति का दास न होकर अपनी योग्यता तथा अपने व्यक्तित्व द्वारा छात्र का ऐसा मार्गदर्शन करना चाहिए जिससे शिक्षा काल के बाद अपने जीवन को सुखमय बनाने में वह स्वंय सक्षम बन सके।''

शिक्षा के सम्बन्ध में इन्होंने चार मूल सूत्र दिये

(1) शिक्षण मातृभाषा में करो।
(2) शिक्षण के द्वारा बच्चों की इन्द्रियों का अधिक से अधिक प्रयोग हो।
(3) शिक्षण स्वाभाविक रूप से करो।
(4) विभिन्न स्तरों पर विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करो।

डा0 एनी बेसेंट ने शिक्षण के लिए अनुकरण विधि, निरीक्षण विधि, क्रिया एवं प्रयोग विधि, निर्देशन विधि, व्याख्यान विधि तथा स्वाध्याय विधि को महत्व दिया है।

अनुशासन – एनी बेसेंट बाह्य व्यवस्था को अनुशासन नहीं मानती थीं। इनकी दृश्टि से सच्चा अनुशासन वह है जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी सभी अपने अन्दर की भावना से प्रेरित होकर समाज सम्मत आचरण करते हैं और विद्यालय के नियमों का पालन करते हैं।

शिक्षक – एनी बेसेंट भारत की गुरू–शिश्य परम्परा से प्रभावित थीं। इनके अनुसार शिक्षक को ज्ञानी के साथ–साथ धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति का तथा सदाचारी होना चाहिए। अध्यापक विद्यार्थियों के लिए आदर्श होना चाहिए। शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि समाज के अशिक्षित व्यक्तियों को साक्षर करे। उन्हें बुराईयों से बचाये तथा अच्छाईयों की ओर ले जाये तथा उनका जीवन स्तर उठाये।

विद्यार्थी – एनी बेसेंट के अनुसार शिक्षार्थी को ब्रह्मचर्य व्रत पालन करना चाहिए। विद्यार्थियों को मन, वचन और कर्म पर नियन्त्रण रखना चाहिए, अध्ययन के लिए तीव्र इच्छा होनी चाहिए, शिक्षकों में श्रद्धा रखनी चाहिए तथा स्वाध्याय में मन लगाना चाहिए। इन्होंने छात्रों को सादा जीवन जीने तथा गुरू की आज्ञा पालन करने का उपदेश दिया।

विद्यालय – इन्होंने गुरूकुलों का समर्थन किया है और इन्होंने माना कि विद्यालय समाज की बुराईयों से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थित होने चाहिए। इन्होंने नारा दिया – ''जंगल की ओर लौटो अर्थात् गुरूकुल की ओर लोटो''

इन्होंने विद्यालयों का समय प्रातः 7 बजे से सांय 6 बजे तक का होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त इन्होंने शिक्षा प्रशासन, जन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, पिछड़े वर्ग की शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा तथा राश्ट्रीय शिक्षा पर भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस प्रकार हम देखते हैं आज समाज जिन शैक्षिक समस्याओं से जूझ रहा है उसका अनुमान एनी बेसेंट जी ने वर्शों पूर्व लगाया था। इन्होंने शिक्षा को मनुश्य के सर्वागीण विकास के साधन रूप में परिभाशित किया जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली से संदर्भित है। इन्होंने मनुश्य के बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बहुत बल दिया है। वे भारतवासियों में अपनी जाति, संस्कृति और धर्म के प्रति गर्व की भावना के विकास करने पर बल देती हैं।

वैसे तो आज देश में 10+2+3 की शिक्षा संरचना लागू होने के बाद हाईस्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या की विभिन्न वर्गों में विकसित करने की आवश्यकता नहीं रही है पर पाठ्यचर्या निर्माण सम्बन्धी उनके कुछ तथ्य आज भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं। आज भी हम पाठ्यचर्या का निर्माण स्तरानुकूल करते हैं। इन्होंने हाईस्कूल का पाठ्यक्रम जितना विस्तृत कम करने पर बल दिया कि वह सामान्य जीवन जीने योग्य बनाये।

अंग्रेजी भाषी होते हुये भी इन्होंने भारत में शिक्षा का माध्यम मातृभाषाओं को बनाने पर बल दिया यह उनके निश्पक्ष और व्यापक दृश्टिकोण को दर्शाता है। शिक्षकों के लिए उनका यह सुझाव भी व्यावहारिक है कि शिक्षकों को किसी भी विधि का प्रयोग करते समय स्वाभाविक क्रम नहीं भूलना चाहिए जब जैसी आवश्यकता हो तब उसे उसी रूप में प्रयोग करें।

ये आत्मानुशासन के पक्ष में थीं। इनका तर्क था कि वास्तविक अनुशासन भय से नहीं प्रेम से हो सकता है। यह भारतीय गुरू–शिश्य परम्परा की पक्षधर थीं। इनका तर्क था कि पहले शिक्षकों को बदलना होगा विद्यार्थी खुद बदल जायेगें। यदि ऊपर से प्रेम बरसेगा तो नीचे श्रद्धा अवश्य उमड़ेगी।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि एनी बेसेंट ने तत्कालीन अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के स्थान पर भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना में विशेष योगदान दिया। वैसे तो यह थियोसोफी के प्रचार कार्य से जुड़ीं थीं। किन्तु इस कार्य के लिए जहाँ जातीं वहीं दीन–हीन व पिछड़े वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाशा माध्यम के स्कूलों की व्यवस्था करवातीं और उनमें कृशि और हस्तकौशलों की शिक्षा की व्यवस्था करवातीं। बालिकाओं के लिए अलग से विद्यालय खुलवाये। इनकी बड़ी देन 1918 में बनारस में हिन्दू सेन्ट्रल कॉलेज की स्थापना की जिसको मालवीय जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में समुन्नत किया।

एनी बेसेंट ने भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी उसी प्रकार अपने मौलिक सिद्धान्तों तथा विचारों का प्रतिपादन किया जिस प्रकार उन्होंने धर्म नीति, पत्रिका–प्रकाशन, राजनीतिक एवं समाज सुधार सम्बन्धी कार्य में चमत्कारी अनुभवों और प्रयोगों द्वारा हम सभी भारतीयों के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उनके इस योगदान के लिए हम सदैव ही चिरऋणी रहेगें। उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदर्शों पर आधारित राजनीति व्यवस्था की कामना की। उन्हीं के शब्दों में –
''भारत को भारतीय भावनाओं, भारतीय परम्पराओं, भारतीय चिन्तन और भारतीय विचारों के आधार पर शासित होना चाहिए।''

अतः हम कह सकते हैं कि तत्कालीन परिस्थियों में श्रीमती बेसेंट के विचार ''व्यावहारिक आदर्शवाद'' के शान्तिकट थे। उनका कहना था कि भारत में शिक्षा का संचालन भारतीय के हाथ में होना चाहिए तथा उन्हीं को शैक्षणिक संस्थाओं को चलाने का आर्थिक तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्व सम्भालना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि कम से कम शुल्क लेकर अधिक से अधिक छात्रों की आवश्यकतायें पूरी की जायें। शिक्षा का भार इससे छात्रों पर नहीं पड़ेगा स्पश्ट है कि डा0 एनी बेसेंट द्वारा प्राप्त दिशा निर्देश से वर्तमान भारतीय समाज की शिक्षा व्यवस्था में निहित तमाम समस्याओं का समाधान वहीं सहजता से हो सकता है। उनके द्वारा प्रस्तुत शिक्षा चिन्तन सर्वकालिक तथा व्यावहारिक है।

इन्होंने भारत में सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना की जागृति और धार्मिक अन्धविश्वासों की समाप्ति के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बड़ा सहयोग किया। सर तेज बहादुर सप्रु ने एक ही वाक्य में पूरी अभिव्यक्ति कर दी है –

''जो कुछ मैं कह सकता हूँ वह यह कि भारतीय राष्ट्र के निर्माताओं में एनी बेसेंट का नाम ऊपर आता है।''